Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

मालती जोशी का कथा साहित्य सं :वेदनाके विविध आयाम

डॉ. सौदागर सालुंखे

प्रस्तावना :-

मालती जोशी का समकालीन हिंदी कथा साहित्य मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।जिन्होने अपने साहित्य से नारी जगत और भारतीय समाज संस्कृती को नया रूप देनेका सफल प्रयास किया है।मालती जोशी ने संख्या की दृष्टि से साहित्य की रचना कम की है पर उसका असर पाठको परडालने का काम किया हुआदिखाई देता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से उत्तर आधुनिकता के बाद जीवन में जो बदलाव आये उनका चित्रण किया है। समाजमें वैवाहिक संबंधों के बदलाव, आर्थिक विषमता के परिणाम, सामाजिक, नैतिक मूल्यों में हो रहे बदलाव, वर्ण व्यवस्था का टूटता परिवेश, नारी का त्याग, जीवन की ओर देखने का बदलता तरिका आदि बातों का चित्रण अपने साहित्य के माध्यम से किया है। मालतीजोशी का कम लिखना ही उनका साहित्यिक परिचय है, और उनका कम लिखना ही दरअसल विशिष्ट लिखना है। जोशी जी की कहानियों का विषय क्षेत्र सीमित है। तथापि सरलता और रोचकता की दृष्टि से वे पठनीय है मालतीजी ने नारी हृदय की आकांशाओ, मानसिकग्रंथियों एवं समस्याओं को विशेष रूप से अंकित किया है। सधी हुई कथाकृतियाँ-, शिल्प के नए प्रतिमान तथा रचनात्मक उपलब्धियों कीजगमगाती पृष्टभूमि में जोशीजी की सभी कहानियाँ रचित है। पराजय, समर्पण का सुख, सहचारिणी, पाषाणयुग, मध्यांतर, विश्वासगाथा,एक घर सपनों का, पटाक्षेप, दादी की घड़ी, जीने की राह, इसके साथ गीत, नाटक और रेखाचित्र ऐसा साहित्यसृजन मालती जोशीनेकिया है। लेकिन विशेष सफलता मालतीजी को कहानी विधा में मिली हुई दिखाई देती है।

चाँद की अमावस एक लंबी कहानी है जिसे बाद में लघु उपन्यास में प्रेम संबंधों की समस्या को आदर्श प्रेम का रुप देकर एकअंतहीन प्रतीक्षा में रस दिखाया गया है। सुनीता एक युवती है, जिसका पति विदेश जाता है, जहाँ उसकी मृत्यु हो जाती है उसकी पत्नीसुनीता गर्भवती रहती है,जो पति के मृत्यु के शोक को बदाश्त नही कर पाती और मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त हो जाती है। बच्चा पैदा होताहै, वह अपने भैयाभाभी के पास रहती है-,जो उसकी ऐसी दशा देखकर परेशान रहते है। इसी बीच सुनीता के पूर्व प्रेमी यशवंत काआगमन होता है, जो सुनीता से अब भी प्रेम करता हैऔर विवाह भी करना चाहता है, यह वास्तव में यशवंत से घृणा करती है। इधरयशवंत सुनीता के कारण ही दूसरी लडकी चारू जो भाभी की

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

बहन है, उनसे विवाह करने से इनकार कर सुनीता की ही प्रतीक्षा करनाचाहता है। जब तक कि वह स्वस्थ नहीं हो जाती, वह भाभी से कहता है प्रतीक्षाअंतहीन प्रतीक्षा।जिस दिन-जीवन की लडाई अकेले लडते-लड़ते हार जाएगी और मुझे पुकारेगी उसी दिन दौडादोडा चला आऊँगा-, उससे पहले नहीं| और भाभी उस दिन के लिए अपने कोमुक्त रखना चाहता हूँ।१ कहानी के अंत में उसकी स्थिति चाँद के समान रहती है दूर - क्षितिपार एक चाँद प्रतीक्षा में बैठा हुआ था। यहकहानी प्रसाद के रोमांटिक उपन्यास आकाशदीप की याद ताजा करती है। प्रेम संबंध में त्याग भावना किस हद तक छुपी है यह यशवंतके चरित्र से प्रकट होती है। यहा प्रेम संबंध का पवित्र रुप प्रस्तुत हुआ है। यशवंत सुनीता के प्रति और सुनीता अपने पति के प्रति समर्पितहोती दिखाई देती है।

जोशीजी ने अपने साहित्य में मध्यवर्गीय समाज के द्व्द्वों का भी वर्णन किया है| दूसरी दुनिया कहानी में इस वर्ग केद्वंद्ववों की छटपटाहट ओर जीवन में होने वाली छोटी छोटी घटनाओं को संबंधों के स्तर पर कैसे महत्व प्राप्त होता है यह दिखाया है ।

आज के समाज मेंपैसा ही सबकुछ है, जिसके पास आर्थिक संपन्नता है, समाज में उनका सम्मान भी है पैसे के अभाव मे समाज क्या सगे रिश्ते भी बदल जाते हैं| यह कहानीआर्थिक तंगी में ग्रस्त सुषमा नामक युवती के मानसिक उद्वेगों को संपादितकरती है। आर्थिक तंगी के कारण परिवार के सभी लोगों की दृष्टि भी बदल जाती है | और ऐसे वातावरण में वह स्वयं को बड़ाअपमानित महसूस करती है | सुषमा सबकुछ कर सकने में समर्थ होते हए भी अपमानजनक जिंदगी जीने को मजबूर है -आर्थिक तंगी मे रिश्ते भी बादल जाते है।भाभी जी द्वा-रादो क्या - दो के नोट देने पर वह सन्न रह सोचती है-यही ओकात रह गई है उसकी?२

परिणय कहानी जीवन के संबंधों पर पूर्णतः खरी उतरती है | कहीं भी जीवन से अलग हटकर कटी हुई या असंगत नहींजान पडती | यह कहानी जीवन संबंधो का नया अंदाज लेकर सामाजिक धरातल पर अवतरित हुई है| मध्यवर्गीय संस्कारों कोपूर्णतयः जीवन के माध्यम से उजागर करती है। कहानी के पात्र तर्क की कसोटी पर एवं आत्मीयसंवेदना के धरातल पर अपनेआसपास के ही प्रतीत होते है-, जो मूर्त रूप थारण कर विभिन्न कथानकों के माध्यम से अपनी अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करतेहै-| जिनका अपना अलगअलग व्यक्तित्व एवं परिवेश है-, जो आज समाज की उपज है |आर्थिक विषमता के कारण घर परिवार के स्त्रीपुरुष दोनों को भी घर चलाने के लिए नोकरी करनी पडती है-, इसकावर्णन मध्यांतर कहानी में किया है। इसमे मध्यमवर्गीय नारी विमल पंडित की मजबूरियाँ कौन-कौनसी है यह दिखाया है। आज कीनारी का क्षेत्र केवल घर के भीतर का नहीं बाहर का भी है | आर्थिक मजबूरियों के कारण विमल विवाहपूर्व और विवाह के बादभी नोकरी करती है आज केवल विमल की ही मजबूरी नहीं है, ऐसी कई नारियाँ दुकानों, दफ्तरों में नोकरी करती है | विमलके कंधों पर घरगृ-हस्थीका बोझ है | जिसे ढोते हुए वह घर और दफ्तर दोनों जगह अपमान काघूंट पीती है | उन्हें एक लडकी है उसकापति उसके साथ हर रोज झगड़ा करता है| ऑडिट के समय और भी लेट होने पर वह अपने बॉस से लिफ्ट लेकर घर जल्दी-जल्दीपहुंचती है।३

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

पति पत्नी में इस प्रकार प्रश्नों को लेकर हररोज झगडा होता है-| पत्नी कहती है हम इतने गए गुजरे है कि दो बच्चे भीनहींपाल सकते | जिंदगीभर दूसरों को ही गृहस्थी का बोझ ढोते रहना होगा।उसके जीवन का सारा उत्साह मिट गया है | पति पर गुस्से से चीखचीखकर कहती है-, आपनेऔरत कहलाने को कुछबाकी रखा है में तो सिर्फ आपके लिए पैसे कमाने की मशीन रह गई हू।कहानी उस विवशता की तीक्ष्णता को शब्द देती है, जहाँ व्यक्ति अपनी संवेदनाओं आर आशाओंआकांक्षाओं कोकुचलकर जीने को - विवश होता है|

'कुहासे' कहानी की नायिका भी संपूर्ण जीवन जीने की इच्छा में परिस्थितियों के फलस्वरुप अंदर बाहर से टूटती हुईगहन वेदना में खंडित व्यक्तित्व जीने को विवश है | इसकी नायिका हमेशा कर्तव्य पथ पर चलते हुए भी गहन निराशा कुंठा से घिरकर, वर्तमान परिस्थितियों से विवश होकर स्वयं से टकराकर लड़खड़ा जाती है और उसका भविष्य कुहासे की भाँति धूमिल होजाता है | आज के परिवेश में लोगों में आत्मीयता का कितना अभाव है, इसका उदाहरण इसकी नायिका से मिल जाता है कि, वहकिसी की भी सहानुभूति नहीं पाती है | अकेले ही खंडित व्यक्तित्व जीने को विवश हो जाती है |

'टूटने से जुड़ने तक' की कहानी में एक ऐसे ही व्यक्ति के मनोवृत्ति का चित्रण किया है जो झुठी प्रतिष्ठा के मोह में पड़करअपनी पत्नी और बेटों की सारी ममता खो चुका है |अपने व्यक्तित्व को दूसरों की तुलना श्रेष्ठ मानने के कारण उसकी स्थितीपरिवार में एक अकेले व्यक्तित्व सी हो जाती है | उसका बेटा आठ महिने तक बेरोजगारी का सामना करता है, पर पिता उसके लिएकिसी से एक शब्द भी नहीं कहते | बेटा एक सुंदर और सुशिक्षित लडकी से विवाह करना चाहता है, पिता उसे स्वीकार करना नहींचाहते क्योंकि वह एक पोस्टमास्टर की बेटी है | धीरेधीरे सारा परिवार कटता चला जाता- है और नोबत यहाँ तक आती है कि उसे बेटे की शादी का कार्ड डाक से निकालता है जिसपर होस्ट की जगह दूसरे बेटे का नाम है |

माँ चाहकर भी बेटे के विवाह में सम्मिलित नहीं हो सकती। पति आग्रह करते ही चली जाती| बच्चों का मन रह जाता।इस पर वह कहती है, चली कैसे जाती | तुम जो यहाँ बेठे रहे | सारी दुनिया से कटकर बच्चों से तिरस्कृत होकर, नोकरों की अवज्ञाका अवताऔर रिश्तेदारों के उपहास के पात्र बनकर | तुम्हें इस तरह छोड़कर चली जाऊँ ऐसी पाषाण हृदय तो नही हूँ।४इस कहानी में नए और पुरातन मूल्यों का संघर्ष दिखाई देता है| सारा परिवार नए मूल्य संक्रमण का शिकार हुआ है, बसमाँ,परिवार और पति के प्रति शाश्वत ममता से ओत प्रोत है-|

'कलंक' कहानी में समाज में उपेक्षित संवेदनशीलता नारी की मानसिक प्रक्रिया के संबंधों को रुपांतरित किया है | इसकहानी में एक पढ़ीलिखी भावुक नारी है-, जिसकी जीवन के प्रति भी भावुक धारणा है, यही भावुकता उसके लिए अभिशाप बनजाती है | पुरुष संबंधों के पक्ष में भी वह भावुकता से काम लेकर अंत में ऐसे मोहपर जाकर यही हो जाती है, जहाँ उसका चरित्रव्यवहार समाज की नजरों में अपराध जनक तथा अविश्वसनीय बन नारीत्व के नाम पर कलंक बन जाता है और उसका मोहभंगअकेलेपन की सीमा तक जा पहुँचता है।

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

बिछोह कहानी के माध्यम से बहुत ही भावुक ढंग से भावुकतापूर्ण संबंधों के आपसी मिलन तथा बिहार का वर्णन हुआहै, जीवन के मार्मिक पहलुओं को भी छुआ गया है।

'विचित्र स्त्री कहानी वर्ण व्यवस्था के विघटन की प्रक्रिया को उजागर करती है | शकुन और शारदा हर विरोध का सामनाकरते हुए आंतर्जातीय विवाह कर लेते है। शकुन जाति से ब्राम्हण हे शारदा ठाकुर लेकिन उन दोनों में प्रेम हो जाता है, और वेजातीय बंधनों से ऊपर उठकर वैवाहिक सूत्र में बंध जाते है कई मामलों में नयी पीटी के साथ ही आजकल पुरानी पीढी के लोग भीजातपात का भेद भूलकर आल - जातीय विवाह को समर्थन देने लगे है| जैसे शकुन कहता हैबदलते युग की मांग के अनुसार मेनेइसीमें - भलाई समझी कि परंपरा की बेटियाँ काट दी जाएँ, त्याग में मेरा विश्वास है कि जाति, पाँति की जड़े शीघ्र ही खोखली होकरनष्ट हो जाएगी फिर नया युग आएगा।५उसकी मान्यताओं से सहमत न होते हुए भी यहाँ कहानीकारों ने शकुन के पिता और कई अन्य लोग उसके विवाह मेंसम्मिलित होते है | पुरातन पंथियों की परंपरागत धारणाओं को चुनौती देते हुए समाज परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया है| रूढ़ियों द्वारा विरोध करने के बावजूद भी आज अंतरजातीय विवाह हो रहे है | यह परिवर्तन सामाजिक विचारधारा का परिणामहै आज के युग में जाति व्यवस्था की धारणा इतनी क्षीण हो गयी है कि लगता है, आनेवाले दो-तीन दशकों में ही जाति प्रथाकालबाहा हो जाएगी (आऊट ऑफ डेट)|

'शोभा यात्रा' कहानी कुंठित व्यक्तित्व की सार्थक प्रक्रिया है और स्वाभाविक परिणति है, जो कला के स्तर पर सौंदर्यमें असाधारण सौंदर्य की सृष्टि करती है | लेकिन यह भावना पलायन के गुजलकों से नही उभरती बरन आत्मगत संघर्षो से द्वंद्वकरके पात्र अपने आप को इस दैन्य के प्रति समर्थन बनाने में सफल हुआ है|

'सहमें हुए प्रश्न में पति अलग जीवन जीने को बाध्य है-पत्नी अलग-| चेतन का जीवन जलता रहा, कभी तंगकभीधीमा-, लेकिन वह पत्नी को कभी अपनी बात नही समझा पाया न पत्नी की समझ सका -| एक अविश्वास असुरक्षा का भाव,संबंधित तनाव दोनों के बीच फैलता गया, जिससे बाहरी संतुलन बिगडा|

मालती जोशी की कहानी 'मुट्ठी भर खुशीयाँ' मे नारी के त्याग की ऊँचाईयों के एक अन्य पहलू को स्पर्श किया है | कहानीकी नायिका गायत्री अपनी सखी विराज के मृत्यु के बाद उसके दो बच्चों का लालन पालन करती है-| विराज का विधुर पति कुमारगायत्री के मातृत्व पर मोहित होकर उससे विवाह का प्रस्ताव करता है, जिसे अस्वीकार करते हुए गायत्री कहती है उसकी चितातो ठंडी हो जाने देते आप | यहीं सोच लिजिए की उसकी जगह आप ही अचानक चले जाते तो ? तो क्या वह ऐसा दुस्साहस कर पाती| आप गलत जगह पर आ गए हैं कुमार साहब ...| आप उसके साथ विश्वासघात कर सकते हैं में नहीं। ६

गायत्री काविराज से सच्चा प्रेम है और नारित्व के प्रति स्वाभिमान भी उसके साथसाथ उसमें - उदारता और त्यागकी भावना है| अतः गायत्री बच्चों के बड़े हो जाने पर विराज के बेटे गिरीश से कहती हैभेया रे"-, अपने बंगले में एक कुटिया मेरेनाम की भी बनवा देना में उसी में पड़ेपोते -पड़े तुम्हारे नाती-खिलायाँ करुंगी।' ७

"अनिकेत कहानी के माध्यम से मालती जोशी ने आज "के अर्थकेंद्रित समाज व्यवस्था के कारण पारंपरिकरिश्तों में बदलावआया है| ऐसी स्थापना समाज शास्त्रीयों कि है|'अनिकेत' कहानी का एक प्रमाण

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

है। इस कहानी मे आज के बहु-बेटे का व्यवहार प्रस्तुत किया गया है। आज नई पिढी पुराणी पिढी को भूलती जा रही है और अपना कर्तव्य तक भूल रही है इसका चित्रण कहानी में हआ है।मा, बाबूजी अपने दूसरे नंबर के पास रह रहे है बहू बेटा दोनों नौकरी करते है। पर उन्हे माँ बाप बोझ लगते है।अवकाश प्राप्त बाबूजी कास्थान परिवार में गौन है। पत्नी के सामनेतो बेटे की कुछ नही चलती | पत्नी के मायके बालो का वह रवागतफरना है।अपनी बहन तक को वह भूल गयाहै। छुट्टन केरूप में बीबी का गुलाम बेटा इस कहानी में प्रस्तुत हुआ है। माँ और बाबूजीया तो छुटटन के पास रहते हैंयाबड़े बेटे के पास| दोनों बेटे ऐसे कपूत निकले है कि अपने माँ-बाप का जरा भी खयाल नही करते बल्किपत्नी की ही बात मानते रहते है | बेटे माँ से प्यार करते है पर पत्नी की अनुपस्थती में ही अपने प्यार को प्रकट करते हैं | वह बहनको भूलना नहीं चाहता पर साली का स्वागत करने को तत्पररहता है छुट्टनको माँ बाप,बहन से जादा पत्नी,साली अधिक प्रिय है।घर परिवार में धीरे धीरे स्त्री का-महत्व बता जा रहा है | स्त्री अब सब कुछ अपने नियत्रणमें रखना चाहती है | अधिकांश स्त्रीया अपने ससुराल बालों की अपेक्षा अपने मायके वाले से अधिक गहरियोंसे जुडी रहती है जो बहुत स्वभाविक है।

निष्कर्थ इस प्रकार मालती जोशी ने पारिवारिक कहानियाँ सफल तरीके से लिखी है उनकी कहानियों मे वर्तमान नारी जागरण की सजीव चेतना को स्थान प्राप्त हुआ है पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का चित्रण और करुणा,सहानुभूति तथा आदर्शवाद के आधार पर उनका सुंदरतम समाधान उनकी कहानियों की उलेखनीय विशेषताएँ है। इन कहानियों में जीवन एवं समाजकी कुरुपताओं के प्रति विद्रोह तथा अन्याय एवं अत्याचार का तीव्र विरोध, रुढीवादी विकृत परंपराओका खंडन एवं नवलोक युक्तसिद्धांतों का मंडन भी उक्त कहानियों की विशेषता है। जोशीजी अपने साहित्य में भारतीय नारी का चित्रण करती है। इनकी भाषाशैली भावानुसार, सक्षम, बोधगम्य एवं प्रभावपूर्ण है मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग की ओर भी व्यापक रूप से ध्यान दिया है।अतः इनके भाषा के सहज सौंदर्य में कोई बाधानहीं पहुची है| कहानियों में वर्णनात्मक एवं नाटकीय शैली के संयोग में रोचक तथाप्रभावपूर्ण कथा शैली का विकास हुआ है। मालती जोशी ने मराठी भाषी होकर भी अपना साहित्य हिंदी में लिखकर हिंदी भाषा रचनाकारों में अपना एक विशिष्ट स्थानबनाया है | अपने साहित्य से उन्होंने दांपत्य संबंधो की नयी परिभाषा बताने का प्रयास किया है (विवाह), वर्ण व्यवस्था के विघटन कीप्रक्रिया को उजागर किया है, आर्थिक विषमता के कारण मध्यमवर्ग में हुए बदलाव, मूल्यों का कम होता प्रभाव ओर नारी त्याग का चित्रणकरके वर्तमान समाज का चित्रण किया है । अतः मालती जोशी मराठी भाषी होकर भी एक सजग और महत्वपूर्ण रचनाकार के रूप मेंहिंदी साहित्य में अपना परिचय करवा देने में सफल हुई है।

संदर्भ ग्रंथ -

1) चाँद की अमावसमालती जोशी -, धर्मयुग, २० सितंबर १९८१ पृष्ठ२२-८-
2) दुसरी दूनियाप्तासाहिक हिंदुस्तान -मालती जोशी -, ३० मई १९८२ पृष्ठ १४
3) मध्यान्तरधर्मयुग -मालती जोशी -, २६ दिसंबर १९७४ पृ८-
4) टूटने से जुलाई तक -मालती जोशी -मध्यांतर१९७९ -स-, पृ२०-
5) विचित्र स्त्री४८ -पृ १९७१ सारिका अक्तूबर-मालती जोशी -

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

6) मट्टी भर खुशियाँपू १९७९ जनवरी २१ -साप्ताहिक हिंदुस्तान-मालती जोशी--१८.
7) मुट्ठी भर खशियाँ१८-पू १९७९ जनवरी २१ साप्ताहिक हिंदुस्तान -मालती जोशी -

आधार ग्रंथ -

1. साठोत्तरी हिंदी कहानियों में पुरुष चरित्रहॉ दीपाहावगीराज मेलारे-
2. आठवें दशक की हिंदी कहानी मधु सिंह
(पत्प सम्बन्धों के संदर्भ में)
१) आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्यरमेश देशमुख .डॉ-